Quadrant II – Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HGC-102

Paper Title: Aadhunik Hindi Padya

Unit: 01

Module Name: निराला द्वारा लिखित कविता 'जल्द -जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ!'

Module No: 02

Name of the Presenter: Ms. Priyanka Devu Velip

Notes :

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म २१ फ़रवरी, सन् १८९९ में हुआ था। उनकी शिक्षा बंगाली माध्यम से शुरू हुई थी। हाईस्कूल पास करने के पश्चात् उन्होंने घर पर ही संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य का अध्ययन किया था। पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में निराला का विवाह मनोहरा देवी से हो गया था। उन्होंने अनेक काव्यसंग्रह लिखे है जैसे अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अनामिका (द्वितीय), तुलसीदास (1939), कुकुरमुत्ता (1942), आदि। अनेक उपन्यास लिखे है , जैसे - अप्सरा (1931), अलका (1933), प्रभावती (1936), निरुपमा (1936) आदि। कहानी संग्रह - लिली (1934), सखी (1935), सुकुल की बीवी (1941), चतुरी चमार (1945) आदि। निराला छायावाद के कवि रहे हैं लेकिन इनके विचार प्रगतिशील रहे हैं। इस कविता में उन्होंने साम्राज्यवादी स्थापना के लिए पूंजीवाद के विरुद्ध आवाज उठाई है। हमारे देश में जो दलित वर्ग है या जो निम्न वर्ग उनका जमींदार लोग या पूंजीवादी लोग हमेशा से शोषण करते आया है। उनके शोषण या अत्याचार का मुख्य

कारण है अज्ञानता। अज्ञानता इसलिए क्योंकि उनको पढ़ने का मौका नहीं दिया जाता था, समाज में समान दर्जा नहीं दिया जाता था इसलिए वे शिक्षा से हमेशा वंचित रहे और शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार भी समाज ने नहीं दिया। निराला ने इस कविता के माध्यम से अपने विचार पाठकों के सामने रखे हैं कि जो दलित वर्ग है या जो पिछड़ा हुआ वर्ग है वह तभी उन्नति कर सकता है या तभी खड़ा हो सकता है जब उसके पास ज्ञान होगा या जब वे शिक्षित होंगे।

जल्द -जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ!

आज अमीरों की हवेली

किसानों की होगी पाठशाला,

धोबी, पासी, चमार, तेली

खोलेंगे अंधरे का ताला,

एक पाठ पढेंगे, टाट बिछाओ|

कवि कहते हैं कि आज अमीरों की हवेली किसानों की पाठशाला होगी। किसान वर्ग की स्थिति आज भी पहले जैसी है। आज भी किसान आत्महत्या करते हैं। उनके पास जीवन जीने के लिए जो साधन चाहिए वह नहीं है। उनके जीवन में आज भी प्रगति नहीं हुई है। इस प्रकार से जिस समय यह कविता लिखी थी उस समय की परिस्थिति और भी खराब थी। जो अमीर वर्ग रहे हैं यानी पूंजीपति वर्ग उनकी हवेलियाँ आज पिछड़े समाज के लिए पाठशाला होंगी। तो आज अमीरों की हवेलियाँ उन वर्गों को ज्ञान का प्रकाश देंगी। वहीं उन्हें उन्नति की ओर आगे बढ़ने देंगी। तो इस तरह से दलित समाज की अलग-अलग जातियों को पढ़ने नहीं दिया जाता था। शिक्षा से उन्हें वंचित रखा जाता था तो आज यही दलित समाज शिक्षा प्राप्त कर अंधेरे का ताला खोलेंगे और समाज में अपना समान दर्जा प्राप्त करेंगे।

यहाँ जहाँ सेठ जी बैठे थे

बनिये की आँख दिखाते हुए,

उनके ऐंठाये ऐंठे थे

धोखे पर धोखा खाते हुए,

बैंक किसानों का खुलवाओ|

कवि कहते हैं कि आज यहाँ जिस जगह पर बैठकर साहूकार, जमींदार, पूंजीपतियों ने शासन जमाया है, जनता को शोषित करने का काम किया है तथा उनको आँखें दिखा कर दबाया गया है तो आज इसी जगह पर उसकी पाठशाला खुलेगी। वे शिक्षित होंगे तो धोखा कम खाएँगे। कवि कह रहे हैं कि अब किसानों की बैंक खुलवाओ, अब किसानों की बैंक खुलनी चाहिए क्योंकि किसान जो पैसा साहुकारों को देते थे वे अब बैंक में डालेंगे इससे उनको कृषि लोन भी मिलेगा ।

सारी संपत्ति देश की हो,

सारी आपत्ति देश की बने,

जनता जातीय वेश की हो,

वाद से विवाद यह ठने,

कांटा काँटे से कढ़ाओ |

कवि कह रहे हैं कि हमारे देश का जो भी उत्पादन है वह अब देश का होगा ना कि दूसरे देश का जैसे कि पहले होता था कि अंग्रेजों के समय में काम हमारे देश में होता था और जो मुनाफा मिलता था वह इंग्लैंड का होता था। सारी संपत्ति भी देश की बननी चाहिए। सारी जनता जाति बंधनों से मुक्त होनी चाहिए। हमारे देश तथा समाज में वर्ग विभाजन के आधार पर जो वर्ण व्यवस्था बनी है उस विवाद को समाप्त करना है। जातपात तथा शोषण जो हमारे देश या समाज के लिए काँटे के समान बन गया तो इस चूबे हुए काँटे को निकालने के लिए हमें एक काँटे का प्रयोग करना है और हमें शिक्षित होकर तर्क देकर, हमारे ज्ञान का प्रयोग कर , हमें समाज में समानता स्थापित करनी है।